[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 936 **B**

Unique Paper Code : 52051221

Name of the Paper : Hindi-A

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. कबीरदास अथवा मीरा का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

2. 'मैथिलीशरण गुप्त' अथवा 'नागार्जुन' की काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषताएं लिखिए। (10)

3. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' अथवा 'बिहारीलाल के दोहों' का प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

P.T.O.

4. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हरि म्हारा जीवन प्राण आधार।

और आसिरा णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार।

थें विण म्हणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।

मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो गेक णिहार।।

अथवा

चल्यौ जाइ ह्यौं को करै हाथिन के व्यापार।

नहिं जानतु इहिं पुर बसौं धोबी ओड़, कुँभार।।

नीच हियै हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत,

ज्यों-ज्यों माथैं मारियत, त्यों-त्यों ऊँचे होत।। (10)

(ख) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

अथवा

वे मे दिनी तल में सुकृत के बीज बोते थे सदा,

परदुःख देख दयालुता से द्रवित होते थेसदा।

वे सत्त्वगुण-शुभां शुसे तमताप खोते थे सदा,

निश्चिंत विघ्नविहीन सुख की नींद सोते थे सदा। (10)

(ग) असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी।

सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी।

अराति सैन्य सिंधु में सुबाड़वाग्नि-से जालों।

प्रवीर हो जयी बनों-बढ़े चलो बढ़े चलो।

अथवा

जै सी मुष ते नीकसे, तैसी चालै नाहिं।

मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जयपुर जाहिं।।

पद गाएं मन हरषियाँ, साषी कह्या अनंद।

सो तन नाँव न जाणियाँ, गल में पड़िया फंध।। (10)

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएँ : सामान्य परिचय

(स्व) आदिकाल की प्रमुख विशेषताएं

(ग) संत काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

(घ) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियां

(ङ) प्रयोगवाद (5×3=15)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 510 **B**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नीचे दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10×3=30)

(क) जानि बूझि साँचहि तजै, करै झूठ सूँ नेह।
ताकी संगति रामजी, सुपिनै ही जिनि देहु।
पद गाए मन हरषियाँ, साखी कह्याँ अनंद।
सो तन नाँव न जाणियां, गल मैं पड़िया फंध॥

अथवा

P.T.O.

प्रेतिनी पिसाचरु निसाचर निसाचरिहूँ मिलि मिलि आपुस में गावत बधाई है।

भैरो भूत-प्रेत भूरि भूधर भयंकर से, जुत्थ जुत्थ जोगिनी जमाति जोरि आई है।

किलकि किलकि कै कुतूहल करति काली डिम डिम डमरू दिगंबर बजाई है।

सिवा पूछैं सिव सों समाज आजु कहाँ चली काहू पैं सिवा नरेस भृकुटि चढाई है।

(ख) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास इहिं काल।
अली कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल ।।
जोग-जुगति सिखाए सबै-मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय-अद्वैतता काननु सेवत नैन।

अथवा

वे जिन तकलीफों को जानकर
उनका वर्णन नहीं करते हैं
वही है कला उनकी
कम-से-कम कला है वह
और दूसरी जो है बहुत-सी कला है वह
कला बदल सकती है क्या समाज?
नहीं, जहाँ बहुत कला होगी, परिवर्तन नहीं होगा।

(ग) नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढा बहुत परन्तु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर
जाने दो, वह कवि-कल्पित था
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से।
गरज-गरज भिड़ते देखा है

अथवा

दुर्गम बर्फानी घाटी में
शत-सहस्र फुट ऊँचाई पर
अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल-
के पीछे धावित हो-होकर
तरल-तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।

2. कबीर के राम के स्वरूप पर विचार कीजिए। (10)

अथवा

कवि भूषण का साहित्यक परिचय दीजिए।

3. बिहारी के दोहों का मूल भाव लिखिए। (10)

अथवा

जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली का विश्लेषण कीजिए।

4. बादल को घिरते देखा कविता का सारांश लिखिए। (10)

अथवा

रघुवीर सहाय की काव्य भाषा पर विचार कीजिए।

5. निम्नलिखित किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(क) संपर्क भाषा के रूप मे हिन्दी

(ख) खड़ी बोली

(ग) रीतिकाव्य

(घ) रामकाव्य

(ङ) छायावाद

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3887 **A**

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नीचे दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) करता था तौ क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोवै पेड़ बबूल का, अंब कहाँ तैं खाइ
जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जाहिं॥

P.T.O.

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषण भनत नाद-बिहद नगारन के, नदी-नद मद गैबरन के रलत है।

ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल, गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि, थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झांई परै, स्याम हरित-दुति होइ॥

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टूटी लाज की लाव।

अंग-अंग छवि में, भयौ भौंर की नाव॥

अथवा

असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह-सी!

सपूत मातृभूमि के - रुको न शूर साहसी!

अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो!

प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!

(ग) तुंग हिमालय के कंधों पर

छोटी-बड़ी कई झीलें हैं,

उनके श्यामल नील सलिल में

समतल देशों से आ-आकर

पावस की ऊमस से आकुल

तिक्त-मधुर विष-तंतु खोजते

हंसों को तिरते देखा है।

बादल को घिरते देखा है।

अथवा

अनुभव से समृद्ध होने की बात तुम मत करो

वह तो सिर्फ अद्वितीय जन ही हो सकते हैं

अद्वितीय यानी जो मस्ती में रहते हैं चार पहर

केवल कभी चौंककर

अपने कुएँ में से झाँक लिया करते हैं

वह कुआँ जिसको हम लोग बुर्ज कहते हैं

2. जयशंकर प्रसाद अथवा नागार्जुन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(10)

3. कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये। (10)

अथवा

भूषण की राष्ट्रीय चेतना का विवेचन कीजिये।

4. बिहारी की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'कला क्या है' कविता के आधार पर रघुवीर सहाय के कला-संबंधी विचारों का परिचय दीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी भाषा का परिचय

(ii) पूर्वी हिंदी

(iii) संत साहित्य

(iv) प्रगतिवाद

(v) राजभाषा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 827 **B**

Unique Paper Code : 62051213

Name of the Paper : हिंदी – (A) Adhunik Bhartiya Bhasha: Hindi Bhasha Aur Sahitya-A

Name of the Course : **बी.ए. (प्रोग्राम) Functional Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (10×2=20)

(क) माला पहर्‌यौं कुछ नहीं, काती मन कै साथ
जब लग हरि प्रगटै नहीं, तब लग पड़ता हाथि ॥

P.T.O.

अथवा

बसै बुराई जासु तन, ताहि कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़िये, खोटै ग्रह जपु दानु।।

(स्व) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है-बढ़े चलो बढ़े चलो।।

अथवा

निशाकाल के चिर-अभिशापित
बेबस उन चकवा-चकई का
बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे
शैवालों की हरी दरी पर
प्रणय कलह छिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है।

2. मीराबाई **अथवा** दिनकर का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. कबीर की साहित्यिक चेतना को स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

बिहारी के दोहों का सार लिखिए।

4. 'नगपति मेरे विशाल' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

अथवा

'बादल को घिरते देखा है' कविता की भाषा शैली का मूल्यांकन कीजिए।

5. कृष्ण काव्यधारा की विशेषताएँ लिखिए। (10)

अथवा

निर्गुण काव्यधारा की विशेषताएं लिखिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए - (5×3=15)

(i) पश्चिमी हिन्दी

(ii) सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी

(iii) प्रयोगवाद

(iv) नयी कविता

(v) भारतेन्दु युग

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 511 **B**

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi : B

Name of the Course : **B.A. (Program)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित किन्हीं 'तीन' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10+10)

(क) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय ॥ ॥

P.T.O.

(ख) बतरस-लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।

सौहँ करै भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ॥

(ग) परिचय पूछ रहे हो मुझसे,

कैसे परिचय दूँ इसका!

वही जान सकता है इसको,

माता का दिल है जिसका।

(घ) कोई न छायादार

पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;

श्याम तन, भर बंधा यौवन,

नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,

करती बार-बार प्रहार:

सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

2. 'तुलसीदास' अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. 'कबीर वाणी के डिक्टेटर हैं' - प्रस्तुत कथन की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए। (10)

अथवा

'घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं' - प्रस्तुत कथन का सार्थक विश्लेषण कीजिए।

4. वातिका का परिचय कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

'तोड़ती पत्थर' कविता का केंद्रीय भाव व्यक्त कीजिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए : (5 + 5 + 5)

(i) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

(ii) सूफी काव्य की विशेषताएं

(iii) रीतिकाल का नामकरण

(iv) द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषताएं

(v) प्रगतिवादी काव्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3888 **A**

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Paper : Hindi : B

Name of the Course : **B.A. (Program)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt **all** questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. निम्नलिखित किन्हीं 'तीन' की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10)

(क) सात समंद की मसि करौं लेखनी सब बनराइ।
धरती सब कागद करौं, तऊ हरि गुण लिख्या न जाइ।।

(ख) रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनानंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।

(ग) मेरा मंदिर, मेरी मस्जिद
काबा-काशी यह मेरी
पूजा-पाठ ध्यान-जप-तप है
घट-घट वासी यह मेरी।

(घ) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देख कर कोई नहीं, देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोई नहीं, सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।

2. 'कबीरदास' अथवा 'बिहारी' का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. तुलसी के 'केवट प्रसंग' का प्रतिपाद्य लिखिए। (10)

अथवा

घनानंद के पदों में अभिव्यक्त 'काव्य सौंदर्य' पर विचार कीजिए।

4. 'तोड़ती पत्थर' कविता का भावार्थ लिखिए। (10)

अथवा

'बालिका का परिचय' कविता का भाव सौंदर्य अपने शब्दों में लिखिए।

5. किन्हीं 'तीन' पर टिप्पणी लिखिए : (5 + 5 + 5)

(1) ब्रजभाषा

(2) भारतेन्दु युग

(3) संत काव्य की विशेषताएं

(4) रीतिकालीन काव्य

(5) छायावाद

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1208 **B**

Unique Paper Code : 72052804

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sampreshan (AECC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) All Courses**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सम्प्रेषण की परिभाषा समझाते हुए सम्प्रेषण की महत्ता पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

सम्प्रेषण की प्रक्रिया के विभिन्न घटकों का उल्लेख कीजिए।

2. मौखिक सम्प्रेषण का स्वरूप और विशेषताएं बताइए। (10)

अथवा

भ्रामक सम्प्रेषण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए सम्प्रेषण की चुनौतियों को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

3. 'सम्प्रेषण में 'संवाद' एक प्रभावी माध्यम है' - इस कथन की समीक्षा कीजिए। (10)

अथवा

'एकालाप भी सम्प्रेषण का एक माध्यम है' - स्पष्ट करें।

4. प्रभावी सम्प्रेषण में 'सुर लहर' की भूमिका पर प्रकाश डालिए। (10)

अथवा

सम्प्रेषण किस प्रकार एक प्रभावी व्यक्तित्व का निर्माण करता है? स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: (6,6,6)

(i) अभाषिक सम्प्रेषण अथवा सामाजिक सम्प्रेषण

(ii) लिखित सम्प्रेषण अथवा व्यावसायिक पत्र लेखन का स्वरूप

(iii) सम्प्रेषण में अरस्तू और लासवेल का मॉडल अथवा सम्प्रेषण में शैरम और बरलो का मॉडल

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए: (6,6,5)

(i) सामूहिक चर्चा अथवा ब्लाग

(ii) जनसंचार माध्यमों पर सम्प्रेषण अथवा शुद्ध उच्चारण

(iii) शब्द सामर्थ्य अथवा भाषिक संरचना की समझ

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4564 **A**

Unique Paper Code : 72052804

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sampreshan (AECC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) All Courses**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सम्प्रेषण की अवधारणा को बताते हुए उसकी प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

सम्प्रेषण के विभिन्न मॉडल कौन-कौन से हैं ? उन पर प्रकाश डालिए।

2. वैयक्तिक तथा सामाजिक सम्प्रेषण का अर्थ बताते हुए दोनों में अंतर स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

P.T.O.

लिखित सम्प्रेषण की सीमाओं पर प्रकाश डालिए ।

3. सम्प्रेषण के माध्यमों में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की भूमिका स्पष्ट कीजिए । (10)

अथवा

सम्प्रेषण के प्रभावी माध्यम के रूप में 'संवाद' की भूमिका पर प्रकाश डालिए ।

4. आयु तथा लिंग किस प्रकार भाषिक सम्प्रेषण को प्रभावित करते है ? स्पष्ट कीजिए । (10)

अथवा

प्रभावी सम्प्रेषण में 'भाषा व्यवहार' पर प्रकाश डालिए ।

5. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : (6,6,6)

(i) लिखित सम्प्रेषण **अथवा** अभाषिक सम्प्रेषण

(ii) व्यावसायिक सम्प्रेषण **अथवा** भ्रामक सम्प्रेषण

(iii) सम्प्रेषण की चुनौतियाँ **अथवा** संभावना

6. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए : (6,6,5)

(i) शब्द सामर्थ्य **अथवा** भाषिक संरचना की समझ

(ii) वेबसाइट **अथवा** इन्टरनेट

(iii) प्रभावी सम्प्रेषण में शिक्षा का महत्व

(100)

(9)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 562 **B**

Unique Paper Code : 52051223

Name of the Paper : Hindi C

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

   (क) हिंदी भाषा का परिचय

   (ख) हिंदी का भौगोलिक विस्तार

   (ग) रामभक्ति काव्य की प्रवृत्तियाँ

P.T.O.

(घ) रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियाँ

(ङ) प्रगतिवादी कविता

2. कबीर की सामाजिक भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सूरदास का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित बिहारी के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

घनानंद का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

4. मावनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित पुष्प की अभिलाष की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'रोटी और संसद' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (10)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मन का डारि दे, मन का मनका फेर।।

अथवा

मुख दधि पोंछि बुद्धि इक कीन्हीं, दोना पीठि दुरायौ।
डारि साटि मुसुकाइ जशोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ।।
बाल-बिनोद मोद मन मोहयो, भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जसुमति कौ यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ।। (10)

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु हीं सौ बात।।

अथवा

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ, सुजान, संकोच औ सोच सहारियै।
रोकी रहै न, दहै घन आनंद, बावरी रीझि के हाथनि हारियै।।
(10)

(ग) चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

अथवा

एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ-
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 703 **A**

Unique Paper Code : 52051223

Name of the Paper : Hindi C

Name of the Course : **B.Com.(Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt all questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(क) हिन्दी भाषा का निर्माण-काल

P.T.O.

(ख) पूर्वी हिंदी की बोलियाँ

(ग) आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ

(घ) सूफी काव्य का परिचय

(ङ) छायावाद (5×3=15)

2. कबीर की सामाजिक-चेतना स्पष्ट कीजिए

अथवा

सूरदास की साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

घनानंद के काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (10)

4. मखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

अथवा

'रोटी और संसद' कविता में कवि क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए। (10)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।

बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

अथवा

इंद्रि सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।

आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।

तुम तौ सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।

सूर हमारे नंद-नंदन बिन, और नहीं जगदीस।। (10)

(ख) कनक-कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाइ।

उहिं खाएं बौराइ इहिं पाएं ही बौराइ।।

01/06/22

अथवा

घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक तें दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौ पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

(10)

(ग) मुझे तोड़ लेना बनमाली !

उस पथ पर देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है,न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है।

(100)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

B

Sr. No. of Question Paper : 829

Unique Paper Code : 62051215

Name of the Paper : Hindi – C

Name of the Course : **B.A. (P) Functional Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. (क) सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।

कर का मन का डारि दे, मन का मनका फेर।।

अथवा

P.T.O.

मैया मैं नहिं माखन खायौ,

ख्याल परै ये सखा सबै मिलि, मेरै मुख लपटायौ।

देखि तुहीं सीके पर भाजन ऊंचे धरि लटकायौ

हौं जुकहत नान्हे कर अपनै करि पायौ।

मुख दधि पोंछि, बुद्धि एक

किन्ही, दोना पीई दुरायौ

डारि साँटि मुसुकाई जसोदा, स्यामहिं कंठ लगायौ

बाल-बिनोद मोद मन मोहयो, भक्ति प्रताप दिखायौ

सूरदास जसुमत को यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायौ।

(ख) थोरै ही गुण रीझते, बिसराई वह बानि।

तुमहू, कान्ह, मनौ भए, आजकिल्ह के दानि।।

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलै तजि आपनपौ झझकै कपटी जे निसांक नहीं।।

घनआनंद प्यारे सुजन सुनौ यहाँ एक ते दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढे हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

(ग) किस गौरव के तुम योग्य नहीं

कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं

जान हो तुम भी जगदीश्वर के

सब है जिसके अपने घर के

फिर दुर्लभ क्या उसके जन को

नर हो, न निराश करो मन को।

अथवा

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,

सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,

रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी

और फूल-फलकर मैं मोटा सेठ बनूँगा।

2. सूरदास का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

अथवा

कबीर की सामाजिक चेतना का निरूपण कीजिए।

3. बिहारी की कविता के शिल्प पक्ष पर अपने विचार रखिए। (10)

P.T.O.

अथवा

घनआनंद की कविता में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

4. "पंत की कविता में प्रकृति बड़े सहज रूप में उपस्थित रहती है"। इस कथन के आलोक में पंत की कविता की समीक्षा कीजिए। (10)

अथवा

मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'नर हो मत निराश करो मन को' का सार अपने शब्दों में लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी कीजिए : (5×3=15)

(i) पूर्वी हिन्दी

(ii) द्विवेदी युग

(iii) संत काव्य

(iv) रीतिकालीन साहित्य

(v) हिन्दी भाषा का भौगोलिक विस्तार

May 2022

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 808 **B**

Unique Paper Code : 12051202

Name of the Paper : Hindi Kavita (Ritikaleen Kavita) हिंदी कविता (रीतिकालीन काव्य)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS (LOCF)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. केशव रचित 'रामचंद्रिका' की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

वर्तमान संदर्भ में रहीम के दोहों की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

(12)

2. 'बिहारी ने अपने दोहों में ज्ञागर में सागर भर दिया है।' कथन का विश्लेषण कीजिए।

P.T.O.

अथवा

बिहारी के दोहों के शिल्प-सौन्दर्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (12)

3. घनानंद की कविता के भाव-सौंदर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

घनानंद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। (12)

4. भूषण की काव्य-भाषा का विवेचन कीजिए।

अथवा

गिरिधर कविराय के काव्य में व्यंजित नैतिक-मूल्यों की समीक्षा कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) बहु बाग तड़ाग तरंगिनी तीर तमाल की छाँह बिलोकि भली।
घटिका इक बैठत हैं सुख पाइ बिछाइ तहाँ कुस काँस थली।
मग को श्रम श्रीपति दूर करैं सिय को, सुभ बाकल अंचल सों।
श्रम तेऊ हरैं तिनको कहि 'केसव' चंचल चारु दृगंचल सों।

अथवा

जो रहीम दीपक दसा, तिय राखत पट ओट।
समय परे ते होत है, वाही पट की चोट।।
पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन। (8)

(ख) जब जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि।।
उन हरकी हँसी कै, इते इन सौंपी मुसकाइ।
नैन मिले मन मिलि गए, दोऊ मिलबत गाइ।।

अथवा

बंक बिसाल रँगीले रसाल छबीले कटाछ-कलानि मैं पंडित।
साँवल सेत निकाई-निकेत हियौ हरि लेत हैं आरस-मंडित।
बेधि के प्रान करैं फिरि दान सुजान खरे भरे नेह अखंडित।
आनंद-आसव-घूमरे नैन मनोज के धोजनि ओज प्रचंडित।।
(7)

6. दिये गये निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो अवतरणों का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) उद्घाटित कीजिए :

(क) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।
रहिमन पैंड़ा प्रेम को, निपट सिलसिली गैल।
बिछलत पाँव पिपीलिका, लोग लदावत बैल।।

(नीति-सौंदर्य)

(ख) बेद राखे बिदित पुरान परि सिद्ध राखे राम-नाम राख्यो अति रसना सुधर में।

हिंदुन की चोटी रोटी राखि राखी है सिपाहिन की कौंधे में जनेऊ राख्यो माला रखी गर में।

मीड़ि राखे मुगल मरोड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद राखी तेगबल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म राख्यों घर में।। (भाव-सौंदर्य)

(ग) पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम
दोनो हाथ उलीचिए, यही सयानो काम
यही सयानो काम, राम को सुमिरण कीजै
पर-स्वारथ के काज, सीस आगे धरि दीजै
कह गिरिधर कविराय, बड़े की याही बानी
चलिए चाल सुचाल, राखिए अपनो पानी।। (नैतिक-मूल्य)

(घ) रूपनिधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ घनानंद है नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहिं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।
(शिल्प-सौंदर्य)
(6+6=12)

(3500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 870 **B**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×2=20)

(क) साईं सूँ सब होत है, बंदे थ कछु नाहिं।
राई थै परबत करै, परबत राई माँहि ॥

(ख) स्वारथु, सुकृत न, श्रमु वृथा, देखिए बिहंग! बिचारि।
बाज पराऐं पानि परि, तूँ पच्छीनु न मारि ॥

P.T.O.

(ग) यवन को दिया दया का दान चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण भूमि को रत्नशील की सिंहल को सीतसृष्टि।
किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आये थे नहीं।।

(घ) जी, गीत जनम का लिखूँ मरण का लिखूँ
जी, गीत जीत का लिखूँ शरन का लिखूँ
यह गीत रेशमी है, यह खादी का
यह गीत पित्त का है, यह बादी का।
है गीत बेचना वैसे बिल्कुल पाप
क्या करूँ मगर, लाचार हार कर
गीत बेचता हूँ।

2. सूरदास की भक्ति भावना पर विचार कीजिए।

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित दोहों के आधार पर तुलसीदास की काव्यकला पर प्रकाश डालिए। (12)

3. बिहारी रससिद्ध कवि हैं, स्पष्ट कीजिए।

अथवा

घनानंद की शृंगार भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. 'रडनों के सपूत' कविता में निहित व्यंग्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का काव्य-सौंदर्य लिखिए। (12)

5. 'उनको प्रणाम' कविता में नागार्जुन ने यथार्थ को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है ?

अथवा

जो बीत गई सो बात गई' कविता का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। (12)

6. बिहारी और नागार्जुन का साहित्यिक परिचय दीजिए। (7)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 910 **B**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×2=20)

(क) कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि।
मन न फिरावै आपणों, कहा फिरावै मोहि॥

(ख) बहु सुख बहु रुचि बहुवचन, बहु अचार व्यवहार।
इनको भलो मनाइबो, यह अजान अपार।।

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहँ साँचे चलै तजि आपनुपौ, झिझकै कपटी जे निसांक नहीं।
घनआनन्द प्यारे सुजान सुनौ इत एक ते दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

(घ) जो उच्च शिखर की ओर बढ़े
रह-रह, नव-नव उत्साह भरे
पर कुछ ने ले ली हिम-समाधि
कुछ असफल ही नीचे उतरे!
उनको प्रणाम!

2. कबीरदास की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

"सूर वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में सूरदास की वात्सल्य भावना का विश्लेषण कीजिए। (12)

3. घनानंद की प्रेम-व्यंजना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

पाठ्यक्रम में निर्धारित बिहारी के दोहों का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

4. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'हिमालय के आंगन में' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

5. 'गीत फरोश' कविता के आधार पर कवि के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।

6. तुलसीदास **अथवा** मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3135 **A**

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी साहित्य की इतिहास लेखन की परंपरा पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी साहित्य के काल विभाजन पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकालीन साहित्य की परिस्थितियों पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

रासो काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों की विवेचना कीजिए।

3. संत काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए उनका मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य की सामान्य विशेषताएँ लिखिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :- (5+5+5)

(i) सिद्ध साहित्य

(ii) रीतिकालीन नीतिकाव्य

(iii) रामभक्ति काव्य

(iv) आदिकालीन सामाजिक परिवेश

(v) अमीर खुसरो

(100)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 937 **B**

Unique Paper Code : 52051222

Name of the Paper : MIL, Hindi-B : Hindi Bhasha aur Sahitya

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (10,10,10)

(क) छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।

अथवा

साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय,
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।

P.T.O.

(ख) साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धरि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के,
नदीनद मद गैबरन के रलत है।।

अथवा

सटपटाति-सैं ससिमुखी मुख घूँघट-पटु डाँकि।
पावक-झर-सी झमकिकै गई झरोखा झाँकि।।

(ग) अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।

अथवा

तू न थकेगा कभी, तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी,

कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु स्वेत रक्त से,
लथपथ लथपथ लथपथ

2. किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

(i) बिहारी

(ii) जयशंकर प्रसाद

3. रामचरितमानस के 'केवट-प्रसंग' का सार लिखिए। (10)

अथवा

कबीर की सामाजिक-चेतना पर प्रकाश डालिए।

4. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' कविता में निहित राष्ट्रीय प्रेम की भावना को अभिव्यक्त कीजिए। (10)

अथवा

'भूषण वीर रस के कवि हैं'। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5,5,

(i) खड़ी बोली

(ii) सगुण भक्ति काव्य

(iii) रीतिकाल की प्रमुख विशेषताएं

(iv) किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का सामान्य परिचय

(v) द्विवेदीयुगीन कविता

(vi) नई कविता

(10

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4131 **A**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य के उद्देश्य' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

'जातीयता के गुण' निबंध का उद्देश्य लिखिए।

2. 'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

भक्तिन और महादेवी के संबंधों के आधार पर भक्तिन के चरित्र की विशेषताएँ बताइए ।

3. 'शायद' एकांकी के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए । (12)

अथवा

'वैष्णव जन' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

4. 'उखड़े खम्भे' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

लक्खा बुआ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3)

(i) पुरुष : कोई भी चीज मन को उलझाती नहीं। उलझाती है, तो बस पन्द्रह मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, घण्टे भर के लिए नहीं, घंटे भर के लिए कोई चीज मन को नहीं उलझाती... ।

स्त्री : रोज दो-दो घण्टे तो बात करते रहते हो, और कहते हो कि... ।

पुरुष : ... कोई चीज होल्ड नहीं करती। लगता है, कुछ होना था, नहीं हुआ। शायद कल होगा। पर वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।

स्त्री : कल तो होता है... पर बात समझ में नहीं आती। कल तो अब आने वाला है। सोकर उठने तक आ जाएगा।

(ii) मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि जो कुछ लिख दिया जाए, वह सबका सब साहित्य है। साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो।

(iii) राजा ने कहा, "कहा है तो उन्हें खम्भो से टाँगा ही जाएगा। थोड़ा समय लगेगा। टांगने के लिए फन्दे चाहिए। मैंने फन्दे बनाने का आर्डर दे दिया है। उनके मिलते ही सब मुनाफाखोरों को बिजली के खम्भे से टाँग दूँगा।" भीड़ में से एक आदमी बोल उठा," पर फन्दे बनाने का ठेका भी तो एक मुनाफाखोर ने ही ले लिया है। राजा ने कहा तो क्या हुआ ? उसे उसके ही फन्दे से टाँगा जाएगा। तभी दूसरा बोल उठा," पर वह तो कह रहा था कि फाँसी पर लटकाने का ठेका भी मैं ही ले लूँगा। राजा ने जवाब दिया, नहीं ऐसा नहीं होगा। फाँसी देना निजी क्षेत्र का उद्योग अभी नहीं हुआ है।

(iv) भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का सम्बन्ध है यह कहना कठिन है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से न हटा सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी से चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी बारी से आने जाने वाले अंधेरे उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं जिसे सार्थकता देने के लिए हमें सुख दुख देते हैं उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए मेरे जीवन को घेरे हुए है।

(v) लक्खा बुआ हुचुक हुचककर रो रही थी। उनका मुँह आंसुओं से झल झला रहा था। विसनाथ ने राम कथा की करुणा का साक्षात्कार सबसे पहले लक्खा बुआ की वाणी के माध्यम से प्राप्त किया। कालिदास, भवभूति से बाद में। लक्खा बुआ पूच्छूँ टोले की नगर वधू थी। वह हंसती बोलती रहती। मुहर्रम बिस्कोहर का सबसे बड़ा उत्सव था। उन दिनों लक्खा बुआ पान की दुकान खोलती। सबसे ज़्यादा भीड़ उन्हीं की दुकान पर होती।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4242 A

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : B.A. (P) Hindi (CBCS)

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'जातीयता के गुण' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

'भाषा संस्कृति और राष्ट्रीयता' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

(12)

2. 'भक्तिन' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

अथवा

'अदम्य जीवन' का सारांश लिखिए। (12)

3. 'वैष्णव जन' के कथानक पर विचार कीजिए।

अथवा

'शायद' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

4. 'उखड़े खंभे' के नाम की सार्थकता पर विचार करते हुए उसका सार लिखिए।

अथवा

'लक्खा बुआ' के जीवन संघर्ष को अपने शब्दों में लिखिए। (12)

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (9×3=27)

(i) भाषा बोल चाल की भी होती है और लिखने की भी। बोल-चाल की भाषा तो मीर अम्मन और लल्लूलाल के जमाने में भी मौजूद थी, पर उन्होंने जिस भाषा की दाग बेल डाली, वह लिखने की भाषा थी और वही साहित्य है। बोलचाल से हम अपने करीब के लोगों पर अपने विचार प्रकट करते हैं-अपने हर्ष-शोक के भावों का चित्र खींचते हैं। साहित्यकार वही काम लेखनी द्वारा करता है।

(ii) दूर-लगभग मील-भर की दूरी पर-कालनेमि की तरह खड़ा था वह लंबा ताड़ का पेड़। जैसे-जैसे हम उस पेड़ की तरफ बढ़ रहे थे, आकाश के बादल लहरों की तरह उस पर केंद्राकार आ-आकर फैल जाते थे। वर्षों से ताड़ का वह पेड़ इसी तरह खड़ा है और वर्षों से उसके हिलते पत्तों ने बादलों की मर्मर सुनी है; किंतु आज उसकी छाया में मनुष्य विक्षुब्ध हैं।

(iii) जो वाचा दृढ़ रखता है, जो आचार दृढ़ रखता है, जो मन दृढ़ रखता है, उसकी जननी धन्य है। वैष्णव जन न तो अशान्त हो सकता है और न अस्थिर। वह सत्य को देख लेता है और फिर निश्चल हो जाता है। भयंकर-से-भयंकर संकट में भी डग-मगाता नहीं क्योंकि वह सत्य का संघर्ष है और सत्य का संघर्ष कठोर और लम्बा होता है।

(iv) हम ऊपर-ऊपर जातीयता का एक दूसरा कारण व्यावहारिक कारण कह आये हैं। काम साधने के लिए मनुष्य का मनुष्य के साथ जो परस्पर संयोग, एकता, उद्यम और साहस है वह व्यावहारिक कारण है। जातीयता का अवांतर कारण प्रतिवासिता अर्थात पड़ोस का निवास, भाषा, मत या धर्म आदि है। पड़ोसी का पड़ोसी के साथ परस्पर आलाप परिचय और सहृदयभाव के द्वारा दोनों में जो एक प्रकार का विश्वास और सहानुभूति हो जाती है उसी सहानुभूति और विश्वास के बल वे दोनों किसी बड़े काम के साधन निर्मित जहां तक एकता के सूत्र में बंध सके उसी को हम व्यावहारिक कारण जातीयता का कहेंगे।

(v) भाषा के विषय में कहा जाता है कि यह सम्प्रेषण का एक माध्यम है। किन्तु भाषा का प्रयोग हर क्षेत्र वहीं तक सीमित नहीं है। वस्तुत: भाषा का सवाल भावना के साथ जुड़ा है। इसलिए भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम मात्र नहीं है बल्कि भाषा एक संस्कार है। हमारे व्यक्तित्व, बल्कि सम्पूर्ण संस्कृति के निर्माण में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। समाज के बीच भावात्मक एकता स्थापित करने और उसे बनाए रखने में भी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3294 **A**

Unique Paper Code : 12051401

Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
(भारतीय काव्यशास्त्र)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi (LOCF)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य हेतु से क्या तात्पर्य है ? भारतीय आचार्यों द्वारा प्रस्तुत काव्य हेतुओं पर विचार कीजिए।

2. रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शब्द शक्ति किसे कहते हैं ? लक्षणा शब्द शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके भेदों का उदाहरण सहित निरूपण कीजिए। (12)

3. महाकाव्य अथवा खंडकाव्य का तात्विक विवेचन कीजिए।

4. (क) किन्हीं **तीन** अलंकारों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

अनुप्रास, विभावना, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास

(ख) किन्हीं **तीन** छंदों के लक्षण - उदाहरण दीजिए - (3×3=9)

भुजंगप्रयात, शार्दूलविक्रीड़ित, चौपाई, रोला, दोहा, छप्पय

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (7×3=21)

(क) ओज गुण

(ख) करुण रस

(ग) रूपक और उपमा में अंतर

(घ) मम्मट के अनुसार काव्य लक्षण

(ङ) काव्य दोष के पाँच प्रकार

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3063 **A**

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. भाषा और समाज के अंतर्संबंध को सविस्तार समझाइए। (15)

अथवा

समाजभाषा विज्ञान से क्या अभिप्राय है समाज भाषा विज्ञान के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

2. भाषा और जातीयता के अंत:संबंध को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

P.T.O.

बहुभाषिकता से आप क्या समझते हैं? भारत में बहुभाषिकता के महत्त्व को समझाइए।

3. शिक्षित एवं अशिक्षित वर्ग की भाषा में अन्तर बताते हुए समाज के विभिन्न वर्गों के भाषा व्यवहार पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भाषा और संस्कृति के अंतः संबंध को रेखांकित कीजिए।

4. भाषा सर्वेक्षण से आप क्या समझते हैं? भाषा सर्वेक्षण की प्रविधि पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

भाषा के नवीन प्रयोग का संबंध आधुनिकीकरण से है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए: (15)

(क) भाषा का समाजशास्त्र

(ख) पिज़िन भाषा

(ग) भाषाई अस्मिता

(घ) भाषा नमूनों का विश्लेषण

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4465(A) A

Unique Paper Code : 12055401

Name of the Paper : हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

Name of the Course : B.A. (Hons.) – Hindi CBCS (GE)

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'प्रवासी साहित्यकार ने हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान दी है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए। (15)

अथवा

वर्तमान में हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले संस्थानों की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

2. मारिशस के किसी एक प्रवासी साहित्यकार की प्रसिद्ध रचना का विस्तार से वर्णन कीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

संयुक्त राष्ट्र का सदस्य होने के बावजूद संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा की स्थिति आदर्श नहीं है। विवेचन कीजिए।

3. विश्व के अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों को विकसित करने में हिंदी सिनेमा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए। (15)

अथवा

हिंदी के वैश्विक प्रसार में टेलीविजन और रेडियो कार्यक्रमों की क्या भूमिका रही है? विस्तृत वर्णन कीजिए।

4. भारत में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की आवश्यकता पर अपने विचार लिखिए। (15)

अथवा

किसी एक विश्व हिंदी सम्मेलन का विस्तृत परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : – (8 + 7)

(i) वैश्वीकरण और हिंदी

(ii) हिंदी की वैश्विक चुनौतियां

(iii) बॉलीवुड गीतों की लोकप्रियता

(iv) वर्तमान में हिन्दी की वैश्विक चुनौतियाँ

(1000)

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3461 **A**

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिन्दी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1 इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1 सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7.5×2=15)

(क) अगर मैं तुमको

ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका

अब नहीं कहता,

या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कुँई,

टटकी कली चंपे की,

P.T.O.

वगैरह, तो

नहीं, कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है

या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

अथवा

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है

सारी रंग बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने

क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें

(ख) आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ--

'यह तीसरा आदमी कौन है?'

मेरे देश की संसद मौन है।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **दो** का रचना-कौशल की दृष्टि से विश्लेषण कीजिए : (7.5×2=15)

(क) कौन है वह व्यक्ति जिसको चाहिए न समाज?

कौन है वह एक जिसको नहीं पड़ता दूसरे से काज?

चाहिए किसको नहीं सहयोग?

चाहिए किसको नहीं सहवास?

कौन चाहेगा कि उसका शून्य में टकराय यह उच्छ्वास?

हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण

जिसको डाल दे कोई कहीं भी

करेगा वह कभी कुछ न विरोध। (मूल – संवेदना)

(ख) जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है

तो उठा लेती है सुई और तागा

मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं

तो सुई चलाने वाले उसके हाथ

देर रात तक

समय को धीरे-धीरे सिलते हैं

जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो

(काव्य – सौंदर्य)

(ग) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत - भाग्य - विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है।

मखमल टमटम बल्लम तुरही

पगड़ी छत्र चंवर के साथ

तोप छुड़ाकर ढोल बजाकर

जय - जय कौन कराता है। (काव्य – बिंब)

3. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

अज्ञेय की कविता का मूल स्वर स्पष्ट कीजिए।

4. 'रामदास' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

राजेश जोशी की कविताओं में व्यक्त स्वप्न और यथार्थ का चित्रण कीजिए।

5. भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

केदारनाथ सिंह की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3499 A

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिंदी उपन्यास

Name of the Course : B.A. (H) – Hindi

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) "हमारे शिक्षालयों में नरमी को घुसने ही नहीं दिया जाता। वहां स्थाई रूप से मार्शल-लॉ का व्यवहार होता है। कचहरी में पैसे का राज है, हमारे स्कूलों में भी पैसे का राज है, उससे कहीं कठोर, कहीं निर्दय देर में आइए तो जुर्माना; ना आइए तो जुर्माना; सबक ना याद हो तो जुर्माना; किताबें न खरीद सकिए

P.T.O.

तो जुर्माना; कोई अपराध हो जाए तो जुर्माना; शिक्षालय क्या है, जुर्मानालय है। यही हमारी पश्चिमी शिक्षा का आदर्श है, जिसकी तारीफों के पुल बाँधे जाते हैं। यदि ऐसे शिक्षालयों से पैसे पर जान देनेवाले, पैसे के लिए गरीबों का गला काटने वाले, पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेच देनेवाले छात्र निकलते हैं, तो आश्चर्य क्या है ?"

अथवा

नौ बजे कथा आरंभ हुई। यह देवी-देवताओं और अवतारों की कथा न थी। ब्रह्म-ऋषियों के तप और तेज का वृतांत न था, क्षत्रियों के शौर्य और दान की गाथा न थी। यह उस पुरुष का पावन चरित्र था जिसके यहां मन और कर्म की शुद्धता ही धर्म का मूल तत्व है। वही ऊंचा है, जिसका मन शुद्ध है; वही नीचा है, जिसका मन अशुद्ध है- जिसने वर्ण का स्वांग रचकर समाज के एक अंग को मदान्ध और दूसरे को म्लेच्छ नहीं बनाया? किसी के लिए उन्नति या उद्धार का द्वार नहीं बंद किया- एक के माथे पर बड़प्पन का तिलक और दूसरे के माथे पर नीचता का कलंक नहीं लगाया। इस चरित्र में आत्मोनन्नति का एक सजीव संदेश था, जिसे सुनकर दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो उनकी आत्मा के बंधन खुल गए हैं, संसार पवित्र और सुंदर हो गया है।

(ख) संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है! प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मनःप्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनःप्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दोहराता है-यही मनुष्य का जीवन है। जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है। मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है- विवश है। कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है। फिर पुण्य और पाप कैसा ?

अथवा

साथ रहने की यंत्रणा भी बड़ी विकट थी और अलगाव का त्रास भी। अलग रहकर भी वह ठंडा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहा, बल्कि अनजाने ही अपनी जीत की संभावनाओं को एक नया संबल मिल गया था कि अलग रहकर ही शायद सही तरीके से महसूस होगा कि सामनेवाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। और वकील चाचा की हर खबर, हर बात इन संभावनाओं को बनाती-बिगड़ती रही थी।

सामने वाले को पराजित करने के लिए जैसा सायास और सन्नद्ध जीवन उसे जीना पड़ा उसने उसे खुद ही पराजित कर दिया। सामनेवाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में, उसी स्थिति में खड़ी है- सांस रोके, दम साधे, घुटी-घुटी और कृत्रिम!

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखिए :

(क) यशपाल

(ख) श्रीलाल शुक्ल

(ग) मन्नू भंडारी

(घ) मैत्रेयी पुष्पा

(7.5×2=5)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित कथाओं का ताना-बाना है। इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (15)

अथवा

'कल की सुखदा और आज की सुखदा में कितना अंतर हो गया है। भोग-विलास पर प्राण देने वाली रमणी आज सेवा और दया की मूर्ति बनी हुई है।' इस कथन के आधार पर सुखदा का चरित्रांकन उदाहरण सहित कीजिए।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास के कथ्य-शिल्प पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'चित्रलेखा' उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास नारी मन की अनेक परतों को खोलता है। स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-शैली पर विचार कीजिए।

(3500)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3647 A

Unique Paper Code : 62053408

Name of the Paper : Vigyapan aur Hindi Bhasha

Name of the Course : B.A. (Prog.)

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विज्ञापन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इसके महत्व को बताइए।

अथवा

विज्ञापन के सामाजिक प्रभावों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(12)

2. विज्ञापन माध्यमों के चयन के आधार क्या होते है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

P.T.O.

सोशल मीडिया विज्ञापन के विभिन्न उपकरणों को विस्तार से समझाइए। (12)

3. विज्ञापन की भाषा के विविध पक्षों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विज्ञापन की भाषा और उसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए हिन्दी विज्ञापनों की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (12)

4. वर्गीकृत विज्ञापन से आप क्या समझते हैं ? दो उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रेडियो जिंगल लेखन से आप क्या समझते हैं, विज्ञापन निर्माण में इसकी क्या भूमिका हैं, उदाहरण सहित समझाइए। (12)

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(i) ट्रेडमार्क

(ii) विज्ञापन में स्लोगन

(iii) ब्रांडिंग

(iv) टैगलाइन

(v) विज्ञापन की भाषा में विचलन

(vi) कॉपी लेखन

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

A

Sr. No. of Question Paper : 3828

Unique Paper Code : 62055636

Name of the Paper : अस्मितामूलक अध्ययन और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – CBCS-GE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) रहइ के जगह नाहीं, जोतइ के जमीन कहाँ,
कहे देबे गाँव से निसार।
घरवा के नमवाँ एं एकाही, मड़ैया के,
ससुई पतोहू परिवार॥

P.T.O.

मैना और मगर गोह, बाँधि मूल खाई सब,
करी गिलहरिया शिकार।
कुकुर के साथ धाई जुठली पतरिया पै,
पेटवा है पपिया भड़ार॥

अथवा

क्या तुम जानते हो
अपनी कल्पना में
किस तरह एक ही समय में
स्वयं को स्थापित और निर्वासित
करती है एक स्त्री ?
सपनों में भागती
एक स्त्री का पीछा करते
कभी देखा है तुमने उसे
रिश्तों के कुरुक्षेत्र में
अपने...आपसे लड़ते।

(ख) सन 1962 के आते ही स्कूल तथा सभी ग्रामीण इलाकों की छटा बदलने लगी थी। कारण था देश का तीसरा आम चुनाव जो फरवरी में होने वाला था। उन दिनों पार्टियों के नेता जनसभाओं पर विशेष जोर न देकर गांव-गांव घूमकर चुनाव प्रचार करते थे, जिसके कारण गांव में बड़ा गर्मजोशी का माहौल बन जाता था। इसी माहौल में पहला सामना हुआ बनारस के विख्यात साधु स्वामी करपात्री जी से, जो हमारे स्कूल में पधारे

थे। हमारे स्कूल के संध्यापक बाबा हरिहर दास ने पहले ही सूचना दे दी थी कि स्वामी जी अमुक दिन आने वाले हैं। स्वामी जी के बारे में अध्यापक लोग कहते थे कि दोनों करों यानि हाथों में जितना भोजन अँटता है, उतना ही वे खाते हैं, इसीलिए उनको करपात्री कहा जाता है।

अथवा

सुबह नींद खुली। अपने ख्यालों में खोई हुए मैं खिड़की से बाहर दूर-दूर तक हडसन नदी का फैलाव देखती हूं। मैं फिर रात को देखे गए सपने के बारे में सोचती हूं। मुझे अपनी भीतर के द्वंद्व से निकलना होगा। लेकिन कैसे ? क्या अर्थ हो सकता है इस सपने का ? कलकत्ता लौटकर कभी करना बोउदी से पूछूंगी जरूर कि तुम्हारी साइकियाट्री में इस सपने का कौन-सा विश्लेषण होगा ? क्या अब भी मेरे भीतर अतीत की वह दहशत जमी हुई है ? या फिर मैं जीवन में तैरना सीख गई हूं ?

2. स्त्री विमर्श की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए 'दलित स्त्रीवाद' को स्पष्ट कीजिए। (10)

अथवा

विभिन्न आदिवासी आंदोलनों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. 'धूणी तपे तीर' उपन्यास के आधार पर गोविंद गुरु की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। (10)

अथवा

ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा रचित कहानी 'सलाम' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'अछूत की शिकायत' कविता के मूल कथ्य पर विचार कीजिए। (10)

अथवा

स्त्री विमर्श के संदर्भ में अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' की समीक्षा कीजिए।

5. "मुर्दहिया' आत्मकथा दलित जीवन की कथा है" इस कथन के आलोक में मुर्दहिया के कथ्य की विवेचना कीजिए। (10)

अथवा

"अन्या से अनन्या तक' पितृसत्तात्मक सामंती परिवेश की अमानवीयता की उपज है" स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (7+8)

(i) पितृसत्ता

(ii) मोहरे कहानी की मूल-संवेदना

(iii) क्या तुम जानते हो मैं स्त्री प्रश्न

(iv) 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' आत्मकथा में चित्रित बचपन

(700)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3277 A

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणा साहित्यिक पद

Name of the Course : B.A. (H) Hindi – DSE

Semester : VI

Duration : 3 hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शब्दालंकार और अर्थालंकार का अंतर स्पष्ट करते हुए उपमा अलंकार को उदाहरण सहित समझाइए। (12)

अथवा

छंद की परिभाषा देते हुए मात्रिक और वार्णिक छंदों के अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य-हेतु विषय पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

गीति काव्य के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

3. जादुई यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

संरचनावाद की प्रमुख स्थापनाओं की विवेचना कीजिए।

4. उपन्यास के प्रमुख तत्त्वों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

आधुनिकता की प्रमुख स्थापनाओं पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: (3×9=27)

(i) स्वच्छंदतावाद

(ii) लक्षणा शब्द शक्ति

(iii) रस-निष्पत्ति

(iv) नाटक

(v) मानववाद

(vi) ग़ज़ल

(1500)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 6309 A

Unique Paper Code : 12057611_OC

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : B.A.(H.) Hindi CBCS-DSE

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. Attempt all questions.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

P.T.O.

1. लक्षणा शब्द शक्ति को भेद सहित सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

अलंकार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उपमा अलंकार को उदाहरण सहित लिखिए।

2. गीतिकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

भारतीय काव्य चिंतन में वर्णित काव्य - हेतु पर विचार कीजिए । (12)

3. समाजवादी यथार्थवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए । (12)

अथवा

संरचनावाद की प्रमुख स्थापनाओं पर विचार कीजिए।

4. उत्तर - आधुनिकतावाद की प्रमुख स्थापनाओं पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

उपन्यास के तत्त्वों का विश्लेषण कीजिए

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी कीजिए। (3×9=27)

(क) छंद

(ख) शास्त्रवाद

(ग) बिम्ब

(घ) कल्पना

(ङ) निबंध

(च) रस - निष्पत्ति

(100)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3009 **A**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10+10+10)

(क) नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र का लक्ष्य एक ही है, केवल उपदेश की विधि में अंतर है। नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के द्वारा बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का यत्न करता है, साहित्य ने अपने लिए मानसिक अवस्थाओं और भावों का क्षेत्र चुन लिया है। हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में

P.T.O.

पहुँचकर साहित्य-सृजन की प्रेरणा देती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति जागृत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है। वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं। पुराने जमाने में समाज की लगाम मजहब के हाथ में थी। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था। पुण्य-पाप के मसले उसके साधन थे। अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। वह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है।

अथवा

वर्तमान युग की ऐसी प्रवृत्ति है। जब मानसिक बंधनों की बाधा घातक समझ पड़ती है और इन बंधनों को कृत्रिम और अवास्तविक माना जाने लगता है। यथार्थवाद क्षुद्रों का ही नहीं, अपितु महानों का भी है। वस्तुतः यथार्थवाद का मूल भाव है- वेदना। जब सामूहिक चेतना छिन्न-भिन्न होकर पीड़ित होने लगती है, तब वेदना की विवृत्ति आवश्यक हो जाती है। कुछ लोग कहते हैं- साहित्यकार को आदर्शवादी होना चाहिए और सिद्धांत से ही

आदर्शवादी धार्मिक प्रवचन कर्ता बन जाता है। वह समाज को कैसा होना चाहिए, यही आदेश करता है। और यथार्थवादी सिद्धांत से ही इतिहासकार से अधिक कुछ नहीं ठहरता, क्योंकि यथार्थवाद इतिहास की संपत्ति है। वह चित्रित करता है कि समाज कैसा है या था, किन्तु साहित्यकार न तो इतिहासकर्ता है और न धर्म शास्त्र प्रणेता। इन दोनों के कर्तव्य स्वतंत्र हैं। साहित्य इन दोनों की कमी को पूरा करने का काम करता है। साहित्य, समय की वास्तविक स्थिति क्या है, इसको दिखाते हुए भी उसमें आदर्शवाद का सामंजस्य स्थिर करता है। दुःख-दग्ध जगत और आनंदपूर्ण स्वर्ग का एकीकरण साहित्य है, इसलिए असत्य अघटित घटना पर कल्पना को वाणी महत्वपूर्ण स्थान देती है, जो निजी सौंदर्य के कारण सत्य-पद पर प्रतिष्ठित होती है। उसमें विश्वमंगल की भावना ओत-प्रोत रहती है।

(ख) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केंद्र ही नहीं हैं, मनुष्यों में वह जिन समस्त नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्राह्मण में वह भले ही निर्गुण निर्विकार हों, मानव रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही गतिशील प्रतिबिंब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृ भक्ति, भ्रातृ प्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की

रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक संबंध है। समाज में चाहे दुखी-दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं। तुलसी के राम न्याय-अन्याय के संघर्ष में तटस्थ नहीं हैं। वह न्याय का सक्रिय पक्ष लेते हैं। लक्ष्मण के मुकाबले वह ज्यादा धैर्य दिखाते हैं, लेकिन उनके धैर्य की एक सीमा है। सीमा पार होने पर वह शस्त्र उठाने में जरा भी आगा-पीछा नहीं करते। यह गुण हमारी जनता का विशेष गुण है। वह बड़ी सहनशील है लेकिन एक सीमा तक ही।

अथवा

प्रयोग का हमारा कोई वाद नहीं है, इसको और भी स्पष्ट करने के लिए एक बात हम और कहें। प्रयोग निरंतर होते आये हैं और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला, कोई भी रचनात्मक कार्य, आगे बढ़ सका है। जो कहता है कि मैंने जीवन-भर कोई प्रयोग नहीं किया, वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा;

ऐसा व्यक्ति अगर सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है, उसमें रचनात्मकता नहीं है, वह कला नहीं शिल्प है, हस्तलाघव है। जो उसी को कविता मानना चाहते हैं, उनसे हमारा झगड़ा नहीं है। झगड़ा हो ही नहीं सकता। क्योंकि हमारी भाषाएं भिन्न हैं, और झगड़े के लिए भी साधारणीकरण अनिवार्य है। लेकिन इस आग्रह पर स्थिर रहते हुए भी हमें यह भी कहना चाहिए कि केवल प्रयोगशीलता ही किसी रचना को काव्य नहीं बना देती। हमारे प्रयोग का पाठक या सहृदय के लिए कोई महत्त्व नहीं है, महत्त्व उस सत्य का है जो प्रयोग द्वारा हमें प्राप्त हो। 'हमने सैकड़ों प्रयोग किये हैं' यह दावा लेकर हम पाठक के सामने नहीं जा सकते, जब तक हम यह न कह सकते हों कि 'देखिए हमने प्रयोग द्वारा यह पाया है।' प्रयोगों का महत्त्व कर्ता के लिए चाहे जितना हो, व सत्य की खोज की लगन उसमें चाहे जितनी उत्कट हो, सहृदय के निकट वह सब अप्रासंगिक है।

(ग) अभिव्यक्ति का संघर्ष दीर्घ होता है। कला का यह तीसरा क्षण दीर्घ होता है। उस संघर्ष में अभिव्यक्ति के स्तर पर आते-आते, हमारे मनोमय तत्त्व-रूप बदलने लगते हैं। होता यह है कि उस संघर्ष के दौरान में भाषा के भीतर अवस्थित ज्ञान-परंपरा और भाव-परंपरा के कारण, जो पहले से ही शब्द-संयोग बने हुए

हैं, उन शब्द संयोगों के साथ अनिवार्य रूप से जुड़े जो अर्थानुषंगों हैं, उन अर्थानुषंगों के प्रभाव में आकर, समशील-समरूप अर्थानुषंगों को आत्मसात कर, मनोमय रूप- तत्त्व अपने को और पुष्ट करते हैं। फलतः ये इस हद तक बदले हैं। जब वे अपने खास साइज और अपनी खास काट की अभिव्यक्ति पा लेते हैं, तब उनके तत्त्व और रूप पहले से बहुत कुछ बदले हुए होते हैं। सामाजिक सम्पदा होने के कारण भाषा मनोनय रूप-तत्त्वों को उनके प्रकट होने के दौरान घटा-बढ़ा देती है और अनजाने ढंग से उनमें नए रूप-तत्त्व ला देती है। साथ ही यह अभिव्यक्ति-संघर्ष भाषा को कुछ बदल देता है, उसे नवीन शब्द-संयोग, नवीन अर्थवत्ता और नयी भंगिमाएँ और व्यंजनाएँ देता है। प्रकार कलाकार भाषा का भी निर्माण करता है। अभिव्यक्ति समाप्त होते ही, उसके संघर्ष का अंत होते ही, कला का तीसरा क्षण भी समाप्त होता है।

अथवा

लेकिन कहानी में मैं जब सार्थकता की बात कहता हूँ तो इसका यह अर्थ है कि कहानी हमारे जीवन की छोटी से छोटी घटना में भी अर्थ खोज लेती है या उसे अर्थ प्रदान कर देती है। इस युग में जब कि 'निरर्थकता' की भावना व्यापक रूप से फैली हुई है और एक वर्ग के लोगों द्वारा फैलाई भी जा रही है, कहानी

जैसे छोटे गद्य-रूप से सबसे पहले सार्थकता की मांग की जा सकती है। यह नहीं है कि छोटी-छोटी बातें ही अर्थहीन प्रतीत होती हों कुछ लोगों को अपना सारा जीवन ही अर्थहीन मालूम होता है और कुछ को तो दुनिया का सारा कारोबार भी व्यर्थ लगता है। परन्तु लघुता में निरर्थकता का खतरा सबसे अधिक है। कहानी की सृष्टि इसी लघुता को सार्थकता प्रदान करने के लिए हुई थी। लोगों की यह धारणा है कि कहानी जीवन के एक टुकड़े को लेकर चलती है, इसलिए उसमें कोई बड़ी बात कही ही नहीं जा सकती। कहानी जीवन के टुकड़ों में निहित 'अन्तर्विरोध', 'द्वंद्व', 'संक्रान्ति' अथवा क्राइसिस को पकड़ने की कोशिश करती है और ठीक ढंग से पकड़ में आ जाने पर यह खंडगत अन्तर्विरोध की वृहद् अन्तर्विरोध के किसी न किसी पहलू का आभास दे जाता है।

2. नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता पूर्व हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के आधार पर आचार्य रामचंद्र

शुक्ल की आलोचना की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'दूसरा सप्तक की भूमिका' में निहित अज्ञेय के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. हिंदी आलोचना के विकास में नामवर सिंह के योगदान का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3480 A

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएं

Name of the Course : B.A. (H) –Hindi – CBCS

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) "भारतमित्र संपादक! जीते रहो- दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। पहली बार आपकी

P.T.O.

बुद्धि पर अफसोस हुआ था। भाई! आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होना चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं। किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की-सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की-सी निकली जिसने ऊंचे आकाश में चढ़े चढ़े भूमि पर एक गेहूं का दाना पड़ा देखा पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न समझा यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने से पहले जाल में फंस गया।"

अथवा

"गलतीवश, मोहवश, दुर्भाग्यवश जब से हमने गलितांग को अपना अंग जानकर काट फेंकने से इंकार कर गले से लगाना शुरू किया है, तभी से विष सारे शरीर में व्याप्त हो गया है। अब से पचास-साठ वर्ष पहले अखिल-भारतीय स्तर पर सहस्र-सहस्र ऐसे ब्रह्मराक्षस पैदा हुए थे जिन्होंने कुकर्मों के स्लो-पॉइजन द्वारा मारते-मारते सनातन धर्म को मार ही डाला! इस पूर्णता से वह सनातन धर्म तो अब पुनः जागने-जीने वाला जिसके सगे ब्राह्मण लोग थे। ब्राह्मण-कुल में मैं भी पैदा हुआ हूं। कोई पूछ सकता है कि सनातन धर्म या ब्राह्मण धर्म के इस विनाश पर मेरी क्या राय है।"

(ख) "समस्या यही है कि आप अपनी कृतियों को कम-से-कम कितने पुरस्कार पर दान दे सकते हैं? आप की कृतियों के साथ ही उस उत्कृष्ट कवि-हृदय को कोई पुरस्कार तो क्या देगा पर

रायसाहब 'पत्र-पुष्प-फल' से सेवा करने के लिए प्रस्तुत हैं। उनका प्रकाशन-कार्य अभी नया है अतः पुरस्कार के मामले में वह एकाएक कलकत्ता और बंबई के प्रकाशकों का मुकाबिला नहीं कर सकते, फिर भी आप जो पुरस्कार उचित समझते हो, लिखें। अविलंब किन शर्तों पर आपकी कृतियों का अधिकार मिल सकता है। अवश्य लिखिए।"

अथवा

"इस विचार को अब तक भिन्न-भिन्न देशों में कितना क्रियात्मक रूप मिल चुका है यह प्रत्येक जिज्ञासु को ज्ञात होगा। पश्चिमीय तथा पूर्वीय जगत देशों में स्त्रियों ने उन बेड़ियों को काट डाला है जिनमें पुरुषों ने बर्बरता के युग में उन्हें बांध कर अपने स्वामित्व का क्रूर प्रदर्शन किया था। उन देशों की महिलाएं राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार के अधिकारों द्वारा अपनी शक्तियों का विकास कर, गृह तथा बाह्य संसार में पुरुषों की सहयोगिनी बनकर अपने देश और जाति के उत्कर्ष का कारण बन रही हैं, अपकर्ष का नहीं।" (8+7=15)

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध की तात्विक विवेचना कीजिए।

P.T.O.

3. 'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'वैष्णव की फिसलन' निबंध की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' आत्मकथा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत कीजिए। (15)

अथवा

जीवनी के तत्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' (नए संघर्ष) की समीक्षा कीजिए।

5. 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खां पाठ का मूल्यांकन कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 3202 **A**

Unique Paper Code : 12057607

Name of the Paper : Lok Natya लोकनाट्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×3=30)

(क) दूनो एके साथे रहे के परानी।

देस परदेस में असाम-मुलतानी

संगही में रावड़ परानी के दासी जानी। परानी,

गवना करा के हमें लइब बिरानी,

P.T.O.

केकरा पर छोड़ि कर टूटली पलनी। परानी..

केकार से आग मागव, केकरा से पानी,

खला-ऊँचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी। परानी..

कहत 'भिखरी' सून होई राजधानी,

पति-मति फेरि द बिंधाचल भवानी। परानी..

अथवा

तोहरे कारनवाँ परानवाँ दुखित बाटे,

दया क के दरसन के दऽ हो बलमुआँ

काहे काइलीं चूकवा कि छोड़लऽ मुलुकवा तूँ

कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआँ।

साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में,

एको नाहीं पतिया भेजलवऽ बलमुआँ।

(ख) कमल से नेत्र नाक सुआ सा चन्दा मुख गोल जिसका

झूठ कदे न बोल्या करता रुप बड़ा अनमोल जिसका

नल जंगल मैं फिरया करै था, सदा अधर्म तैं डरया करै था।

प्राण खींच तप करया करै था, सत मैं पूरा तोल जिसका।

अथवा

ठाकर काके पास बिठाले सब पुरवाली आगे

भोजन शक की सोधी कोन्या आच्छे खेलण लागे।

पति बिन किस तैं करूं जिकर मैं, ऐसा चढ़गया सांस शिखर मैं।

जिन ने काल्ह सुणी थी तेरे फिकर मैं वै सारे राल्यू जागे

(ग) सांचो सत जंगल का जीव में, देख्यो है म्हने देख्यो है।

सत को सांचो पड़छो देख्यो, यो मन म्हारो बेक्यो है

जैसे पाप की पड़ली छत में, सत को धाबो टेक्यो है।

सत को सांच देखो ने, भरभ मन, को हेडी ने फेक्यो है।

सत की संगत ने मन जाग्यों, मोह को बंधन छेक्यो है

गिद्ध पे सती हुई है मोरढणी, आग में तन सब सेक्यो है।

अथवा

अरे हां जी सत हम देखगा सतवंती, पिंगला नार को।

पिंगला का मन में घणो, हे सत को अभिमान

सतवंती का सत की परिक्षा, आज करां परधान

परख्या पिंगला नार को, भेटा गरब गुमान

खोटा खरा सोना की जैसे, जवरी करे पेचान

गरब भरी बातां करे, करे घमंड की बात

या तो बात म्हारा मन में खटकी, फिकर होय दिन रात।

P.T.O.

2. लोकनाट्य परम्परा पर विचार करते हुए सांग की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

ख्याल का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी परम्परा की विवेचना कीजिए।

3. 'भिखारी ठाकुर' का मन संयोग शृंगार की अपेक्षा वियोग शृंगार में अधिक रमा है - बिदेसिया के आधार पर सिद्ध कीजिए। (10)

अथवा

बिदेसिया के नाट्य - शिल्प की समीक्षा कीजिए।

4. नल - दमयन्ती सांग में 'नल' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए। (10)

अथवा

सांग की विशेषताओं के आधार पर नल - दमयन्ती की समीक्षा कीजिए।

5. 'राजयोगी भरथरी' माच की मूल संवेदना लिखिए। (10)

अथवा

'राजयोगी भरथरी' के आधार पर माच के शिल्प का विवेचन कीजिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3937 **A**

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahityachintan

Name of the Course : **BA (Prog.) Hindi CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. साहित्य की प्रयोजनीयता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

साहित्य की समाजशास्त्रीय दृष्टि की विवेचना कीजिए।

2. रस का स्वरूप स्पष्ट करते हुए साहित्य में रस के महत्व को रेखांकित करें। (15)

P.T.O.

अथवा

रस की परिभाषा देते हुए रस के अंगों का परिचय दीजिए।

3. शब्द शक्ति से क्या अभिप्राय है? शब्द शक्ति के रूप में व्यंजना शक्ति का विस्तृत परिचय दीजिए। (15)

अथवा

किन्हीं तीन अलंकारों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

4. काव्य और लय के परस्पर संबंध को उद्घाटित कीजिए। (15)

अथवा

काव्य में छन्द के महत्व का निरूपण करते हुए मुक्त छन्द की परिकल्पना पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :- (8,7)

(i) फैंटेसी

(ii) वात्सल्य रस

(iii) साहित्य और समाज

(iv) मात्रिक छंद

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4024 A

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahitya Chintan

Name of the Course : BA (Prog.) Hindi CBCS - DSE

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. क्या अन्य चीज़ों की तरह साहित्य को भी उपयोगिता के तराज़ू पर तौला जा सकता है? साहित्य और समाज के संबंध में इसपर विचार प्रकट कीजिए। (15)

अथवा

साहित्य की मनोविश्लेषणवादी दृष्टि की विवेचना कीजिए।

P.T.O.

2. रस के भेदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

अथवा

रस के अंगों का निरूपण कीजिए।

3. लक्षणा शब्द-शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

काव्य में अलंकारों का महत्व रेखांकित कीजिए।

4. काव्य में छंदों की क्या भूमिका है? (15)

अथवा

काव्य में लय की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) रस निष्पत्ति

(ii) अभिधा शब्द-शक्ति

(iii) साहित्य में स्त्रीवादी दृष्टि

(iv) काव्य और तुक